International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 10 Issue 3 Ser. II || March 2021 || PP 07-11

परमपावन14वें दलाईलामाजीऔरलदाखः एक आध्यात्मिकसम्बन्ध

Dr. Sonam Zangpo
Assistant Professor
Dept. of Indo-Tibetan Studies,
Bhasha-Bhavana, VISVA-BHARATI, Santiniketan

सारां ा

21वीं सदीमेंतिब्बतीबौद्धधर्मकोवि वपटलपरप्रका ितकरने का गौरवपरमपावन14वें दलाईलामाजीकोप्राप्तहै।इन्होंनेप्रायः वि व के सभीदे ाों की यात्राऐं की हैंऔरवहांइन्होनेतिब्बतीबौद्धधर्म, कला, संस्कृति, एवंपरम्पराआदि के विशय परअनेकरोचकव्याख्यान, गम्भीरप्रवचनतथातांत्रिक अभिशेक, आगम एवंउपदे ाभीदियेहैं।इसकेअतिरिक्तइन्होंनेमहायानबौद्धधर्म का व्यापकरूपसे विस्तारकरनेके साथ–साथपारस्परिकि ाष्टाचार की सम्बन्धोंको बाखूबी बढ़ायेहैं।अपनेकार्यकौ ालताओं के कारणइन्हें समय–समय परदे ा–विदे ा के अनेकगौरवमयपुरस्कारों से भीसम्मानितकियेगये।वेपिछले छह द ाक से अधिक समय से भारतमेंप्रवासकररहेहैं।इन्होंनेभारतीय हिमालय मेंस्थितअनेक क्षेत्रोंमेंपधारकरबौद्ध समाज, धर्म–द नि, कला–संस्कृति, ि ाक्षा परम्परा, प्राचीननालन्दापरम्पराआदि के संरक्षण एवंउत्थान के लिए अमूल्य योगदानप्रदानकियाऔरआजपर्यन्तउन कार्योंमेंकार्यरतहैं।

Date of Submission: 02-03-2021 Date of Acceptance: 16-03-2021

परिचय

वि व ाांति के साक्षात् दूततथाबोधिसत्त्वआर्यावलोकिते वर केप्रत्यक्ष प्रतिमूर्तिकोईऔरनहींबल्किपरमपावन14वें दलाईलामाजीहैं।इन्हेंसन् 1989ई. मेंभाांतिनोबेलपुरस्कार से सम्मानितकियेगये।वेहिमवंतदे ा (तिब्बत) के विख्यातआध्यात्मिकगुरु तथामहायानीजगत् के सबसेप्रतिश्ठितमहाविभूतिहैं।वर्तमानमेंभलेही ऐसाकोईमहायानीबौद्ध होंजो इनके भुभनाम एवंकृतकृत्यों से अपरिचितहों।वे21वीं सदी के सबसेअधिकप्रसिद्ध विद्वान्,रचनाकार एवं धार्मिकगुरु हैं।वेसर्वप्रथमसन् 1956ई. मेंआर्यवर्त (भारत)मेंआयेथे।उस समय इन्हेंमहाबोधि सभातथातत्कालीनभारतीय सरकार ने 2500वें बुद्धजयंती के उपलक्ष्य मेंआयोजितकियेजानेवालेअंतर्राश्ट्रीय संगोश्ठीमेंसम्मिलितहोनेतथा उस संगोश्ठी का अध्यक्षता पद ग्रहणकरने के लिए तिब्बतसे भारतमेंआमंत्रित कियेगये।[1]यह एक प्रकार सेइनकाप्रथमविदे ा यात्रा तथातिब्बतीमहायान धर्म का महान् प्रचारकहोने का संकेतभीथा।

भारत एवंतिब्बत का सम्बन्ध बहुतप्राचीनकाल से चलाआरहाहै।पहलेभारतीय विद्वान् आचार्योंकोतिब्बतमेंआमंत्रित कियेजातेथेऔरअबतिब्बत के विद्वान् बौद्धधर्माचार्योंकोभारतमेंआमंत्रित कियेजानेलगेहैं।आजभारतमेंप्रवासकरनेवालेपरमपावनदलाईलामाजी एवंअन्य तिब्बतीविद्वान्,सिद्ध महापुरुश, साधकआदिइसका एक प्रत्यक्ष उदाहरणहै।भारतीय हिमायलवासीबौद्ध,तिब्बत एवंतिब्बतीबौद्धधर्मकोसीखने एवं समझने कोलेकरसबसेअधिकउत्साहितएवंप्रयत्न ीलरहतेहैं।इसीक्रममेंहज़ारोंवर्शपहले से लदाख का तिब्बत के साथ घनिश्ठसम्बन्ध रहाथा।उदाहरणार्थवहां के राज–परम्परा, मठीय ि ाक्षा–दीक्षा आदि की परम्परा का उदगमप्रायः वि ुद्ध रूप से तिब्बतदे ारहाहै।भारतमेंपरमपावन के प्रवास से वहचिरपरिचितधार्मिकसम्बन्ध औरभीअधिकसुदृढ़ एवंपुश्ठहुआहै।यहीकारणहैकिआजभारतमेंप्रायः तिब्बत के सभीबौद्ध सम्प्रदाय के प्रधानरिनपोछेगणनिवासकररहेहैं।

सन् 1959ई. मेंभोटदे ा (तिब्बत) परचीन का पूर्णदमन होने के बादपरमपावनदलाईलामाजीभारतमेंसैकड़ोंअन्य तिब्बतीबन्धुओं के साथभारणलेनेआयेथे।प्राराम्भमेंभारत के कुछस्थानों के भ्रमणकरनेके बादहिमाचलप्रदे ाराज्य के ज़िलाकंगड़ास्थित धर्म ाालापहुँचे।बादमें यही धर्म ाालाइनके स्थायीनिवास एवंनिर्वासिततिब्बतियों का प्र ासनिकमुख्यालय बनाऔरआजभीहै।यहीं से इन्होंनेभारत के विभिन्नस्थानों एवंप्रदे ोंमेंस्थापितकियेगये,निर्वासिततिब्बतीसमुदाय के रोजी–रोटी, कपड़ा, मकान के अतिरिक्ति ाक्षा, धर्म, संस्कृति, कला, सामाजिकपरिपाटीआदि के लिए युद्धस्तरपरकार्यकरनाभुभारम्भकिया।वेस्वयंदे ा–विदे ामें धर्मार्थ एवंतिब्बतीसमुदाय केहितार्थ के लिए भ्रमणकरनेलगेऔरजहांजिससंस्था, भद्रलोग एवंदे ासे जोकुछभीसमर्थन एवंआर्थिकअं ादानआदिप्राप्तहोताथावह सब इन्होंनेनिर्वासिततिब्बतीसमुदाय के सुचारु व्यवस्थापन के लिए भेंटकिये।इस तरहइन्होंनेदिन–रात एककरअपनेकु ालसहयोगियों के साथमिलकर दुःखी एवंदयनीय तिब्बतीसमुदाय के उन्नयनमेंतनमन धन एवं धर्म से कार्यकिया।यह इनके ही उन कार्यों का परिणामहैकिआजनिर्वासिततिब्बतीसमुदाय भारततथाविदे ोंमेंसुख,सुविधा एवंसुरक्षित जीवन यापनकररहेहैं।

लदाख से सम्बन्ध

परमपावन14वें दलाईलामाजीविगतछहद ाक से भीअधिक समय से भारतमेंप्रवासकररहेहैं। इस दौरानइन्होंनेभारतीयहिमालय के विभिन्न क्षेत्रों काभ्रमणकियाहै।इस आत्मीयता की कड़ीमेंइन्होंनेसबसेअधिकलदाख क्षेत्र की यात्राऐं की हैं। ये यात्राऐंकेवलभ्रमण एवंलुफ़्त उठाने की उद्दे य से नहींकी जातीथीबल्कि अध्ययन–अध्यापन,पारस्परिक,सांस्कृतिकतथाि ाश्टसम्बन्ध कोस्थापितकरने के लिए की जातीथी।लदाख से तिब्बत का सम्बन्ध न केवल इनके जीवनकाल से बनीहैबल्किहज़ारोंवर्शपूर्व से प्रारम्भहुआथाजिसकोइन्होंनेऔरभीअधिकठोस,सौम्य तथासौहार्दबनायाहै।इसलिए यह भौक्षणिक एवं धार्मिकसम्बन्धों के पारस्परिकआदान–प्रदान की दृश्टि से भीमहत्वपूर्ण यात्राऐंहोतीथी।धर्म ाला के बाद एक तरह से लदाख इनकादूसरातपोभूमि एवंकर्मभूमिरहाहै।

सन् 2019तकलदाख जम्मू एवंक मीरराज्य का एक संभागहुआकरताथाजिसको5अगस्तसन् 2019मेंवर्तमानभारतीय सरकार ने एक केन्द्रभाासित क्षेत्र घोशितकियाऔरआजलदाख अखण्ड़ भारत का एक केन्द्र भाासित क्षेत्र है।यह क्षेत्र हिमालय के पारअनेकगगनचुम्बीपहाड़ों से गिराहुआतथाभीतरेगिस्तान का एक अनोखा हिमालय का तीर्थस्थलहै।इस संभाग के अन्तर्गतदोचर्चितज़िलेआतेहैं–लेहऔरकरगिल।लेहअनेक घाटियोंमेंविभाजितहैजिनमेंनुबरा, चङथङ औरभामक्षेत्र पड़ताहै।उसीप्रकारकरगिलज़िलाभीअनेक घाटियोंमेंविभाजितहैंजिनमेंज़ंस्कर,बोद–खरबु, वाखा, भागर–चिगतनआदिहै।अतएवपरमपावन ने लदाख क्षेत्र के लेहज़िला का हीभ्रमणनहींकियाथाबिल्कवहां केदुर्गम से दुर्गमतरस्थानों एवं घाटियों की यात्राऐंभीकी हैं।इन्होंनेलदाख के सभीभागों की एक नहींबल्किअनेकबार यात्राऐं की हैंजिनमेंजंस्कर, नुबरा, चङथङ, भाम, बोद–खरबु, वाखा आदिप्रमुख हैं।इनकाप्रत्येक यात्रा लदाखवासियों के लिए नवजीवन एवंनवउत्साहभरनेवालाहोताहै।इन्होंनेलदाख मेंबुद्ध भााक्यमुनि के वचन, भारतीय आचार्यों के भाास्त्र तथातिब्बतीमनीशियों कीरचनाओं के

[1]माइलॉन्ड एण्ड माइपीपलए दलाईलामा

गूढ़ार्थि ाक्षाओंकोप्रवचन के माध्यम से जन–जनतकप्रचारितकिया।लदाख के अनेकभौक्षणिक एवंगैर ौक्षिणकसंस्थाओंमेंपधारकरवहांउपस्थितसमस्तं ाक्षक,ि ाश्य, अधिकारी,कर्मचारी, धर्मगरु,नेताआदिकोअपनेअनमोलवचनों का अमृतवृश्टिबरसाकरतृप्तकिया।बौद्ध, ईसाई एवंमुस्लिमआदिसमुदायों के बीच एकताऔरसद्भावना के साथरहने का संदे ादिया। यहीकारणहैकिमुस्लिमसमुदाय के द्वाराइन्हेंआमंत्रित कियेजानेपरवेसहर्श उनके आमंत्रणोंकोस्वीकारकरतेथेऔरवहांजाकरअपनेलम्बेंअनुभव एवंज्ञान से उनकोअवगतकरातेथे।इसकेअतिरिक्तमैत्री,करुणा,मुदिता एवं उपेक्षा आदि ाक्षाओं के द्वारापरस्परभाईचाराऔरभांतिस्थिर रखने की सलाहदेतेथेजोकिकमोबे ासकल धर्मों का मूलसंदे ाहै।

लदाख मेंआध्यात्मिक यात्राऐं

इन्होंनेअपनीआध्यात्मिक यात्राओंमेंज़रियेप्राचीननालन्दामहाविहार की बौद्ध ि ाक्षा परम्पराकोहिमालय क्षेत्र मेंपुनरजीवितकिया।समस्ततिब्बतियों की भांतिहिमालय वासी एवंलदाखवासीभीप्रतिवर्श6 जुलाईकोइनकेजन्मदिवसकोहर्शोल्लास के साथमनातेहैं।इन्होंनेज़ंस्कर एवंनुबरादोनों घाटियों का पाँच–पाँचबार यात्राऐं की हैं। ये दोनों घाटियांलदाख में 'छोस्–युल' अर्थात् धर्म–प्रदे ाव भूमिके नाम से प्रसिद्ध है।परमपावनजी ने अपने61वर्श के भारतप्रवास के दौरानलदाख क्षेत्र का अनेकबार स्मरणीय यात्राऐं की हैं।अतः संक्षेपमेंउनकाविवरण इस प्रकारहै।

1966मेंपहली यात्रा

परमपावनजीका द र्निजितनासरल, सार्वदे ाकऔरसार्वजनिक रूप से आजभारततथाविदे ोंमेंकियाजाताहैउतनातिब्बतमेंभीइनकाद र्निपानातिब्बतियों के लिए असम्भवथा।इसलिए इनकालदाख मेंपधारनालदाखियों के लिए अत्यंत स्मरणीय एवंसौभाग्य का सौगातरहाहै।वेलदाख मेंसर्वप्रथमसन् 1966ई. मेंआयेथे। उस दौरानइन्होंनेलेहमेंवि ोशकर 'पलमोलुगस्' अर्थात् श्रीमतीपरम्परा के आधारपरमहाकरुणिकबोधिसत्त्वआर्यावलोकिते वर का अभिशेकप्रदानकियाथा।इसकेअतिरिक्तइन्होंनेलदाख के सभी श्रद्धालुओंको 'द ाकु ालकर्म' कोसाधनेतथा 'द ाअकु ालकर्म' कोत्यागनेआदि केविशयोंपर धर्मप्रवचनदियेथे।उसीवर्श से इनकीलदाख यात्रा भुरु हुईऔरतब से कुछअन्तराल के बादवह यात्रा की श्रृंखलाआजपर्यन्तजारीहै।

1971मेंदूसरी यात्रा

सन् 1971ई. मेंवेपुनः अखिललदाख गोनपासभा एवंलदाख बौद्ध सभादोनों के विनम्रप्रार्थनापर द्वितीय बारलदाख आये। इस यात्रा के दौरानवेप्रथमबारनुबरा घाटीमेंगये।वहांइन्होंनेसैकड़ोंबौद्ध श्रद्धालुओंकोमहाकरुणिकबोधिसत्त्वआर्यावलोकिते वर का अभिशेकतथाभट्टारक 'चोङखापा' (1357–1419) द्वाराविरचित 'लमर्चोर्नमग्सुम' अर्थात् त्रिविध प्रधानमार्ग का उपदे ादियाथा।वेअपनेप्रत्येक यात्राओं के दौरानकेवललेह के निकटवर्तीस्थानोंतकहीसीमितनहींरहे, बल्किदूर से सुदूरवर्तीस्थानोंतकगयेऔरवहांअपनाआ ि ाश–वचन का प्रसादप्रदानकिया।इन्होंनेप्रत्येकबारलदाख के बौद्ध धर्मावलम्बियोंकोबौद्धधर्म एवंद र्नितथातिब्बतीबौद्धधर्म का परिचय एवंज्ञान से अवगतकराया।

1976मेंतीसरी यात्रा

इस बारवे16दिनतकलदाख मेंनिवासकिये।लेहमेंइन्होंनेप्रथमबारतीनदिनोंतक 'ि ावईछल' अर्थात् भांतिउद्यानमेंकालचक्र का उपदे ा एवंअभिशेकप्रदानकिया।इसकेअतिरिक्तइन्होंनेआचार्यअति ादीपांकरश्रीज्ञान(982–1054) द्वाराकृत 'बोधिपथप्रदीप' तथातिब्बत के विद्वान् 'डुल छु थोगमेद स़ङपो' (1297–1369)विरचित 'ग्यलस्रसलगलेनसोब्दुन म' अर्थात् बोधिसत्त्व के 37अभ्यासपरभाास्त्रगतउपदे ादिया।इस यात्रा के बाद से लदाखवासी एवं इनके मध्यगुरु–ि ाश्य का परम्परासुदृढ़ होतागया।

1980मेंचौथी यात्रा

लगभगचारवर्शों के बाददिनांक22.8.1980 कोवेलेहमेंआयेऔरप्रथमबारलदाख स्थितज़ंस्कर घाटीमेंगये।इस दौरानइन्होंनेवहां एकत्रित भाग्यवानोंको 'योनतनं ा ग्युर म' अर्थात् गुण मूलाधारणी का पाठागतउपदे ातथाआर्यावलोकिते वर का अभिशेकआदिऔर ाड़ाक्षर एवंवज्रगुरु आदिमन्त्र धारणियों का अधिकाधिकजपकरनेहेतुउनकाआगम–उपदे ाआदिप्रदानकिया।

1984मेंपाँचवीं यात्रा

इस यात्रा के दौरानवेप्रथमबारलेहस्थित 'ओमा चङथङ' मेंगयेथे।वहांलदाख के विविध स्थानों से एकत्रित श्रद्धालुओंकोइन्होंनेअनेककल्याणकारी धर्मोंपदे ाप्रदानकिया।तत्प चात् लेह से नुबरा घाटीमेंगये।इनकीनुबरामें यह दूसरी यात्रा थी।वहांउपस्थितअसंख्य श्रद्धालुओंकोइन्होंने धर्मोंपदे ाप्रदानकियाऔर उनके पुण्य संचय करनेमेंप्रत्यक्ष एवंअप्रत्यक्ष रूप से सहयताकी।लेहस्थित 'ि ावईछल' मेंदोदिनोंतक 'योनतनं ाग्युर म' का उपदे ादियाऔरइच्छुक श्रद्धालुओंकोसंवरग्रहणविधि की ि ाक्षा–दीक्षा भीदिये।इस बारवेलदाख मेंलगभग14दिनोंतकउपस्थितरहेथे।

1987मेंछठवीं यात्रा

परमपावनजीकोजबभीलदाखवासियों ने आमंत्रित कियेउन्होंनेइनकाभव्य रूप से स्वागत एवंअभिनंदनकियाथा।लदाख मेंअपने ाश्ट्म यात्रा के दौरानइन्होंनेपाँचदिनतक 'ि ावईछल' में 'ग्यलस्रसलगलेनसोब्दुन म' का गम्भीर एवंविस्तृतप्रवचनदियाऔरबोधि प्रणिधानचित्तसंवरकोग्रहणकरने की विधि की ि ाक्षा–दीक्षा भीदिये।लगभग9दिनलदाख मेंनिवासकरने के प चात् वेअपनेगन्तव्य स्थल के लिए प्रस्थानहुए।

1988मेंसातवीं यात्रा

इस यात्रा के दौरानवेपुनः ज़ंस्करमेंगयेऔरवहांतीनदिनतककालचक्र का उपदे ा एवंअभिशेकप्रदानकिया।लेहस्थित'ि ावईछल'में'गे ो ग्लङरि थङपा दोर्जे सिङगे'(1054–1123) द्वारारचित 'लोजोङ छिगग्यद म' का पाठागतप्रवचनदिया। इस वर्शलेहमेंपरमपावन के लिए 'गेफेल ग्लिङ' नामक एक भव्य 'फोटङ' अर्थात् प्रासाद का पूर्णनिर्माणहुआथा।इसलिए परमपावनजीवहांविश्रामकियेथे।इसकेबादइन्होंनेजितनीभीलदाख की धार्मिक यात्राऐं की वेप्रायः वहींनिवासकियाकरतेरहेहैं।अपने इस यात्रा के समय वे13दिनतकलदाख मेंउपस्थितरहेऔरउसकेबादअपनेगन्तव्य स्थल के लिए रवानाहुए।

1997मेंआठवीं यात्रा

इस बारलगभग9वर्शों के बादवेलदाख मेंआयेथेऔर10दिनतकलदाख मेंउपस्थितरहे।लेहमेंइनकाअभूतपूर्वरूप से भव्य स्वागतकियागया। इस यात्रा के बाद से परमपावनजी का लदाख के साथसम्बन्ध प्रतिवर्श घनिश्ठतरहोतागया।विगतवर्शों की भांति इस दौरानभीइन्होंनेलेहस्थित 'ि ावईछल' मेंआचार्यअति ाकृत 'दमपापावइ ञिङ नोर' का गम्भीरप्रवचनदिया।इसकेअतिरिक्तबोधिचित्तोत्पादसंवर, बोधि प्रणिधानचित्तसंवर, उपासकसंवरआदिप्रदानकिये।इसीदौरानइन्होंनेभवेतताराचित्तमण्डल व चक्र का आयु–अभिशेक(छेवङ) भीप्रदानकिया।इस यात्रा–कालमेंवे एक बारफिरज़ंस्कर घाटीमेंगये।वहांदोदिनतक रुककर श्रद्धालुओंकोश्रीवज्रभैरव का महाभिशेकप्रदानकिया।

1998मेंनौवीं यात्रा

विगतवर्शों की भांतिलेहहवाईअड्डे से 'ि ़ावईछ़ल' स्थितपरमपावनजीके आवासीय प्रासादतकसड़क के दोनोंओर श्रद्धालुओं का तंतातथा उनके हाथोंमें धूप, पुश्प, 'खतग', आदिप्रत्येकस्थानपरपताकाऐं, प्रार्थना ध्वज, तोरणआदिथा। इस प्रकारएक मनोहर दृ य के साथइनकाअसाधारण रूप से स्वागतकियागया।'ि ़ावईछ़ल'मेंदोदिनतकइन्होंने 'ग्र्यलस्र्सलगलेनसोब्दुन म' का प्रवचनदियातथा 'स्ग्रोलद्करयिदबि ़ान ह्खोरलो' (वेत ताराचित्तमण्डल व चक्र) का उपदे । एवंअभिशेकदिया।वेइस बारभीलेह के अतिरिक्तदूसरीबार 'ञोमा चङथङ' मेंगये।वहांभीइन्होंने 'ग्र्यलस्र्सलगलेनसोब्दुन म' का प्रवचन एवं 'छेवङ' आयु–अभिशेकदियाथा।वेलगभगबीसदिनतकलदाख मेंउपस्थितरहेथे।

1999मेंदसवीं यात्रा

परमपावनजी ने एक साल के भीतरहीलदाख कीपुनः यात्रा की।लेहमेंइनकाभव्य स्वागतकियागया। 'ि ़ावईछ़ल' मेंइन्होंनेआचार्यकमल ील (8वीं भाती) प्रणीत'स्गोमरिमबरप' अर्थात् मध्यम भावनाक्रमतथाआचार्यभांतिदेव (7वीं भाती) प्रणीतबोधिचर्यावतार का प्रवचनदियागया।इसकेअतिरिक्तबोधि प्रणिधानचित्त एवंबोधि प्रस्थानचित्तदोनों का विधि संवरप्रधानकिया।इस बारवेलदाख में14दिनतकरहेऔरअपनेअनमोलप्रवचनों द्वारालदाख सहितसमस्तहिमालय क्षेत्रोंके श्रद्धालुओंकोलाभांवितकिया।तत्प चात् अपनेगन्तव्य स्थान के लिए प्रस्थानहुए।

2002मेंग्यारहवीं यात्रा

इस बारभीलदाख के निवासियों ने परमपावनजी के स्वागतमेंकोईकमीनहींछोड़ी।लदाख के साथइनकासम्बन्ध अपनीमातृभूमिसमानबनागयाथा।लेहमेंआकरवेतीनदिनोंतक 'ि ़ावईछ़ल' मेंविश्रामकरने के उपरान्तप्रथमबार 'ललोग चङथङ' मेंस्थित ' ारछुखुलगोनपा' मेंपधारेथे। यहलदाख स्थित 'चङथङ' का दूसरा क्षेत्र है।'ललोग चङथङ' से वापसआने के बादइन्होंनेलेह के अनेकस्थानों की यात्रा कीं।लेह के नीचलेभागमेंस्थित 'स्त्रे' नामकस्थानमेंपूज्य 'लोछेनरिनपोछे' द्वारानवनिर्मित 'स्त्रे गोनपा' मेंगयेऔरवहां एकत्रित श्रद्धालुओंकोकल्याणकारी धर्मोपदे ादिये।इसीक्रममेंवेपूज्य 'सोगर्चे रिनपोछे' द्वारा'चङथङ' मेंनवनिर्मितगोनपा के प्रतिशठान के लिए 'वनले'अथवा'अनले'नामकस्थानमेंगयेऔरभामकोवहां से वापसलेहआये।तत्प चात् तीनदिनतक'ि ़ावईछ़ल'में 'बोधिपथप्रदीप' एवं 'ग्र्यलस्र्सलगलेनसोब्दुन म' का प्रवचनदिया। 'ललोग चङथङ' के अतिरिक्तवेपुनः 'ञोमा चङथङ' मेंपधारेथेवहांइन्होंनेतीनदिनतकवहांउपस्थितभाग्यवान श्रद्धालुओंको 'ग्र्यलस्र्सलगलेनसोब्दुन म' तथा 'कदमथिगलेचुटुग' का उपदे ादियाथा।इस बारवे10दिनतकलदाख मेंरहे।

2003 मेंबारहवीं यात्रा

परमपावनजीपुनः एक वर्श के भीतरलेहआयेऔरलदाखियों ने इनकाभव्य स्वागतकियागया। इस बारलेहमें एक सप्ताहतकइन्होंनेसाधना एवं ध्यानकिया।उसकेबादइन्होंनेकरगिलज़िले के अन्तर्गतस्थितबौद्ध स्थलों की यात्रा की। इस क्रममेंवेसबसेपहले 'मुलबिग'मेंगयेऔरवहांपाशाणपरउरेकितमैत्रेय बुद्ध की द ानकी। 'मुलबिग' मेंवे इस क्षेत्र के बौद्धों द्वारानिर्मित 'फोटङ' मेंविश्रामकिये।वहांउपस्थितबौद्ध एवंमुस्लिमसमुदाय दोनों के भाग्यवानश्रोतावृंदोंकोमैत्री, करुणाआदितथाभांति एवं एकतामेंरहने की हितोपदे ादियेथे।उसी क्षेत्र के 'वाखा' मेंपधारकरभिक्षुणी गोनपा का प्राण–प्रतिशठानकिया।उस दौरानभीइन्होंनेवहांउपस्थितसमस्त श्रद्धालुओंकोअनेकमूल्यवानउपदे ादिये।वे 'बोद–खरबु' मेंभीगयेऔरवहां से लेहलौटआये। एक बारफिरवे 'ञोमा चङथङ' मेंस्थित 'छ़ागा', के निकट 'वनले' मेंगये।जहांपूज्य 'सोगर्चेरिनपोछे' द्वारानवनिर्मित 'ट ीछोस ग्लिङ गोनपा' मेंगये।वहांइनकास्वागतभिक्षुणियों ने भव्य रूप से किया। उस दौरानइन्होंने 'चङथङ' क्षेत्र मेंनिवासकरनेवाले यायावरलोगोंकोबुद्ध भााक्यमुनि के धारणी '**ओम् मुनेमुनेमहामुनेयेस्वाहा**', आर्यावलोकिते वर के ाटाक्षरमन्त्र '**ओम् मणिपद्मेहूँ**',तथामंजुश्री के '**ओम् अरपर्चन धीः**' आदि धारणियों के नियमितपाठ एवंजपकरने के लिए प्रत्साहितकियाऔरअनेकहितकारीउपदे ादिये।वहां से वापसलेहआकरइन्होंनेचारदिनतक 'ि ़ावईछ़ल' मेंआचार्यदीपंकरश्रीज्ञानविरचित 'जङसेम नोरबुइ ठेङव' तथा15वीं सदी के तिब्बत के महान् विद्वान् एवं 'गेलुग' सम्प्रदाय के संस्थापक 'जे चोङखपा लोस़ङ डगपा' के द्वाराकृत 'लम र्चोनमग्सुम' (त्रिविध प्रधान मार्ग) का गम्भीरप्रवचनदिया।

2005मेंतेरहवीं यात्रा

17अगस्त2005कोपरमपावनजी20दिनों के लिए पुनः लदाख मेंपधारेथे। इस दौरान8 दिनतकवे 'ि ़ावईछ़ल' मेंस्थितअपने 'गेफेल ग्लिङ' प्रासादमेंसाधनारतरहे।तत्प चात् नुबरा घाटीस्थित'तुरतुक' क्षेत्रमेंगयेऔरवहांउपस्थितसभीबौद्ध एवंमुस्लिमजन–सैलाबकोअपनेहितोपदे । का आि ाशप्रदानकिया।वहां से लौटकरदिनांक3 से 5 सितम्बरतक 'ि ़ावईछ़ल' में एकत्रित असंख्य जनसमूहको धर्मोपदे ाप्रदानकिया। इस प्रकार7 सितम्बर2005कोलेह से दिल्ली के लिए प्रस्थानहुए औरलदाखवासियोंको एक बारफिर से धर्मदान से धन्य–धन्य एवंभाग्यवानकरगये।

2007मेंचौदहवीं यात्रा

लगभग एक वर्श के अन्तराल के बाददिनांक4अगस्त2007 कोवेलदाख मेंपधारेथे। इस बारवेलदाख में16 दिनोंतकठहरेथे। इस दौरानइन्होंनेनुबरा घाटी के अतिरिक्तअन्य स्थानों की यात्रा की औरवहां के श्रद्धालुनिवासियोंकोअपनाअनमोलप्रवचनदिया।नुबरा'देस्किद'मेंनवनिर्मित 'फोटङ'मेंनिवासकियाऔरसहस्र्भुज एवं एकद ामुख आर्यावलोकिते वर का अभिशेकप्रदानकिया।लेहवापसआकरकेन्द्रीय बौद्ध विद्यासंस्थानमेंनिर्मितपुस्तकालय भवन का ' ारबञ्ेस्जेदछ़ल' नामकरणकिया।दिनांक14 से 19 अगस्ततक'ि ़ावईछ़ल'में 'लमरिमछेनमो' का उपदे ादिया।

2009मेंपन्द्रहवीं यात्रा

9अगस्त2009मेंवे एक बारफिरलेहपधारेथे।जम्मू एवंक मीरराज्य के तत्कालीनमुख्यमंत्री श्रीऊमरअब्दुल्लहसहितलदाख के समस्तवि ाश्टरिनपोछेगण, सरकारी एवंगैरसरकारीअधिकारीगण, विविध समुदाय एवंसंस्थाओंके प्रतिनिधिगण, विभिन्नविद्यालयों के छात्र–छात्राऐं, स्थानीय श्रद्धालुगणआदि ने लेहहवाईअड्डा से 'ि ़ावईछ़ल'तकइनकाभव्य स्वागतकिया।अन्य वर्शों की भांति इस बारभीइन्होंनेलेहमेंस्थितअनेकसरकारी एवंगैरसरकारीस्कूलों की दौराकी। इस क्रममेंवेलेह'लमडोनमॉडलसीनिअरसेकन्डरीस्कूल'(लमडोन आद ावरिश्ठमाध्यमिक विद्यालय) मेंगयेऔरवहांउपस्थितअधिकारी, छात्र तथाकर्मचारीआदिकोअपनामूल्यवानप्रवचनदिया।15अगस्तकोवेप्रथमबारलेह के दुर्गमस्थल 'लिङ ाद' मेंहैलिकॉप्टर द्वारागये।वहांउपस्थितनिकटवर्तीग्रामों के श्रद्धालुओंकोइन्होंनेभवेततारा का अभिशेकप्रदानकिया।वहां से लौटकरज़ंस्करमेंगयेजहांदोदिनतक रुककर इन्होंनेवहां के भाग्यवान श्रद्धालुओंको धर्मोपदे ादिया।ज़ंस्कर से लौटकरलेहमेंस्थित ायामुस्लिमसमुदाय द्वारानिर्मित 'मातमसराय' गये। इस दौरानकेन्द्रीय बौद्ध विद्यासंस्थान के स्वर्णजयंती के उपलक्ष्य मेंइन्हेंवहांआमंत्रित कियेगये। उस संस्थानमेंउपस्थितहोकरइन्होंनेवहां एकत्रित संस्थान के अधिकारी, कर्मचारी, छात्र, भिक्षु–भिक्षुणी संघसहितअन्य आमंत्रित समस्तअतिथियोंकोअनमोलप्रवचनदेतेहुए भील के पालनपर बल दिया।लगभग20दिनतकलदाख निवासकरनेके बादवे29अगस्तकोदिल्लीरवानाहुए।

2010मेंसोलहवीं यात्रा

अपनेलदाख यात्रा के क्रममेंवे19जुलाई2010कोलेहपधारे। इस दौरानइन्होंनेनुबरा कादौराकियाऔरवहांमैत्रेय बुद्ध की वि ालमूर्ति का प्रतिश्ठानकिया।दिनांक20 से 24जुलाईतकवहांइन्होंने 'लम र्चोनमग्सुम' का प्रवचनदिया। इस दौरानवेदोदिनतक 'समतन ग्लिङ गोनपा' मेंविश्रामकियेथे। इस बारवेमात्र एक सप्ताहहीलदाख मेंरहेथे।

2010मेंसत्रहवीं यात्रा

6अगस्त2010कोलदाख के अनेकस्थानों एवंगाँवोंमेंभीशण बाढ़ आयाथाजिसमेंसैकड़ोंलोगों की जानतथाकरोड़ोंमाल का क्षतिहुई।लदाख में उस समय हरतरफ त्राहि–त्राहिपुकार का माहौलथा।अतः उस बाढ़ से पीड़ितलोगोंकोसाहसबांधनेतथाअपनेपरिवारजनों से वियोगहोनेके संताप से संत्रस्त लागोंकोसांत्वनादेने के लिए वे13सितम्बर2010कोपुनः लेहमेंआकस्मत रूप से पधारेथे।उस प्रचण्ड बाढ़ मेंमरनेवालेतथा घायलहोनेवालोंके भीघ्रस्वास्थ्य लाभहेतुलेह 'जोखङ विहार'मेंइन्होंनेवि ोशप्रार्थनासभा का नेतृत्वकिया।इसकेअतिरिक्त उन बाढ़ पीड़ितों के सहयतार्थइन्होंनेआर्थिक रूप से भीबहुतमद्दकी।इसीक्रममेंइन्होंनेलेहलमडोनस्कूल के खेल–मैदानपर एकत्रित हुए हज़ारोंलोगोंकोसम्बोधितकियाऔर उनके सुख–दुःख मेंभी उनके साथहोनेका अपनापरमदायित्वनिभाया।

तत्प चात् 14सितम्बर2010कोवेकरगिलस्थित'वाखा–मुलबिग'मेंपधारे।वहांइन्होंनेहज़ारों के तादातमें एकत्रित जनसमूहकोबोधिचर्यावतार का प्रवचनदिया।महायानहोने के लिए बोधिचित्तोत्पाद काअभ्यासअत्याव यक है।इसलिए उपस्थित श्रद्धालुओंकोबोधिचित्तोत्पादसंवरप्रदानकिया।इसकेअतिरिक्तअवलोकिते वर का अभिशेकभीप्रदानकिया।तिथि26सितम्बर2010कोवेवहांसे धर्म ाला के लिए प्रस्थानहुए। इस दौरानवे13दिनतकलदाख मेंरहेथे।

2012मेंअठारहवीं यात्रा

दिनांक18जुलाई2012कोवेक मीर से लेहपधारेथे। इस बारफिर से इन्होंनेलदाख के अनेकस्थानों एवंस्कूलों की यात्रा की।वे 'ललोग चङथङ' और ' ाम' क्षेत्र के 'बीमा' मेंगये। 'बीमा' में यात्रा के दौरानइन्होंनेवहां के श्रद्धालुओंकोभारणगमनतथाबोधिचित्तोत्पाद िक्षा की उपयोगितापरप्रवचनदियें।वे27जुलाईकोलेहलमडोनस्कूलमेंनवनिर्मितविज्ञान–प्रयोग ाला के उद्घाटनकरनेगये।उसीप्रकार28जुलाईकोचोगलमसरमेंनवनिर्मित 'सङ दोगपलरि' गोनपा का प्रतिश्ठानकरनेपहुँचे। इस दौरानवहां एकत्रित जन–सैलाबकोइन्होंनेप्रवचनदिया।तिथि4 से 7अगस्ततक'ि ावईछल'मेंबोधिपथप्रदीप के अनुसारबोधिप्रणिधिचित्ततथाबोधिप्रस्थानचित्त के उत्पत्ति का प्रवचनदियाऔरसाथमें 'लम र्चोनमग्सुम' का भीप्रवचनदिया।इसकेअतिरिक्तआर्यावलोकिते वरतथाभवेतताराका आयु–अभिशेकप्रदानकिया।13अगस्तकोवेलेह से वायुयान द्वाराजम्मू के लिए रवानाहुए। इस बारवेलदाख मेंकुल26दिनतकरहेथे।

2013मेंउन्नीसवीं यात्रा

लगभग एक साल के अन्तराल के बादवे28जुलाई2013कोलदाख आये।विगतवर्शों की भांतिइनकाभव्य स्वागतकियागया। इस बारवेलेहमेंलगभगतीनसप्ताहतक ध्यान–साधनामेंलीनरहेथे।तत्प चात् इन्होंने50हज़ार से अधिक एकत्रित वि ालजनश्रद्धालुओंकोआगम, अभिशेकतथाउपदे ादिया।लेह 'जोखङविहार'मेंपधारकरइन्होंनेअपनेप्रवचन के दौरानलदाख के बौद्ध धर्मावलंबियोंकोबौद्ध द र्न के अध्ययन–अध्यापनपर बल दिया।23अगस्त के सुबहवायुयान द्वारालेहसे धर्म ाला के लिए प्रस्थानहुए। इस बारभीवेलदाख में26दिनतकउपस्थितरहेऔरअपनेप्रवचनों से लदाखवासियोंकोलाभांवितकिया।

2014मेंबीसवीं यात्रा

अबतक के सभी यात्राओंमेंवेइस बारसबसेअधिक35दिनोंतकलदाख मेंउपस्थितरहेथे। इस दौरानइन्होंनेलदाख के विभिन्नस्थानों की यात्रा की।वे इस बारभीज़ंस्करमेंगयेऔरवहां 'लमरिमदुस्तोन' का प्रवचनदिया।वहां से लौटकर'बोद–खरबु'मेंपधारेऔर'वाखा'मेंस्थित'स्प्रिंगडेलस् पब्लिकस्कूल' के नवनिर्मितछात्रावास का उद्घाटनकिया।वहांउपस्थितसमस्त श्रद्धालुओंकोआि ाशस्वरूपअपनाव्याख्यानदिया।तत्प चात् हैलिकॉप्टर द्वाराकरगिल से लेहआये।फिर 'ि ावईछल' मेंअवस्थित 'गेफेल ग्लिङ फोटङ'मेंविश्रामकिया।29जूनकोवे'पेथुबगोनपा' केस्थापनाको600वां वर्शगांठ के उपलक्ष्य परवहांगये। उस गोनपा का द र्नकियाऔरउसकेनिकटमेंस्थित 'बकुलामिमोरिअलपार्क' (बकुला स्मारक उद्यान) कोनिहारनेगयेऔरउसकोपवित्र स्थलमें रूपमेंअधिश्ठितकिया। इस दौरानइन्होंनेलेह के निकटमेंस्थितबहुत से गोनपाओं का द र्नकियाजिनमें'ग्युदज़िनतांत्रिक गोनपा', 'फे'तथा'लुखिलगोनपा'आदिप्रमुख है।लुखिलमेंइन्होंने 'प्रज्ञापारमिताहृदयसूत्र' का प्रवचनदिया।विगतलदाख यात्राओं की भांति इस बारभीइन्होंनेलेह के निकटमेंस्थापितअनेकविद्यालयों का दौराकियाजिनमेंटीसी वी, चोगलमसरआदिप्रमुख है।

तिथि3 से 14जुलाईतक'ि ावईछल' मेंवि ोशकरकालचक्र–पूजातथाउससेसम्बन्धितप्रार्थना, विधि आदिव्यवस्थापन के अनुरूपअभिशेक, आगम एवंप्रवचनप्रदानकिया।लदाख में यह इनकातृतीय कालचक्र–पूजाका अभिशेक एवंउपदे ाथा।इससेपहलेइन्होंनेसितम्बर1976औरजुलाई1988मेंज़ंस्करमेंप्रदानकियाथा। इस प्रकार19जुलाईकोवेलेह से दिल्ली के लिए वायुयानमार्ग द्वाराप्रस्थानहुए।

इस प्रकारपरमपावनदलाईलामाजीसन् 2015, 2016, 2018और2019मेंभीलदाख मेंपधारेथे।इस दौरानइन्होंनेअपनीनेतृत्वमेंलदाख मेंप्रथमबार 'यर–छोसछेनमो' अर्थात् ग्रीश्म–महाधर्मसभा का आयोजनकराया।इसमेंलदाख मेंस्थितसभीबौद्ध सम्प्रदायों के समस्तश्रेणियों के भिक्षुसंघकोकिसी एक बौद्धमठमेंसम्मिलितहोकरपन्द्रहदिनों के लिए पूजा–पाठप्रार्थना के अतिरिक्तबौद्धिक एवं धार्मिकचर्चाऐंकरने के लिए आहावनकियागयाथा।इनके मार्गद र्नमेंवहप्रतिवर्शसफलतापूर्वकआयोजितहोनेलगा। यह सचमुचमेंलदाख को एक 'धर्मभूमि व एक लामाभूमि' साबितकरनेमेंअत्यन्तउल्लेखनीय कार्यहै।

उपसंहार

परमपावन ने भारतमेंरहतेहुए बौद्धधर्म एवंवि ोशकरतिब्बतीबौद्धधर्मतथाभाशा–कला, संस्कृतिआदि का जितनाअधिकविस्तारकियाहैउतना यदिवेतिब्बतमेंरहेहोतेतोभाायदनहींहोपाते।अतः भारतमेंइनकानिवासबौद्धधर्म के लिए किसीदैव्य वरदान से कम नहींसिद्ध हुआ। इनके नेतृत्वमेंतिब्बत का सम्बन्ध तथामहायान का वृहद् पैमानेपरप्रचार–प्रसारअद्यतनहोरहाहै। 'कुछपाने के लिए कुछ खोनापड़ताहै।' ठीकइसीकहावत के अनुरूपबे ाकइनकातिब्बतत्यागनातिब्बतदे ा के लिए अहितकरसिद्ध हुआहोपरन्तुबौद्धधर्म एवंवि ोशकरमहायान धर्म के लिए यह 'सोनेपरसुहागा' जैसाचरितार्थहुआ।वस्तुतः ऐसाकरनाहीमहायान की ि ाक्षा का समीचीनपालनहै।जहांहज़ारों के हित के लिए स्वार्थ एवं एकाधिकव्यक्तियों का हित का तिलांजलिदेनेहोतेहैंऔर ऐसाइन्होंनेकियाहै। इनके लदाख मेंबारम्बरपदार्पण से लदाखवासी धन्य एवंपुण्यवान् हुए हैं।इसलिएवेसदा इनके अत्यन्त ऋणी रहेंगे।अन्तमेंउनकीसुस्वास्थ्य एवंदीर्घायुजीवन के लिए त्रिरत्न से हार्दिककामनाकरताहूँ।

संदर्भग्रंथसूची:

रिगपईब्दुदर्चि, अंक–4, केन्द्रीय बौद्ध विद्यासंस्थान,चोगलमसर, लेह। 2004
ङोस क्यि युल दङ ङोस क्यि मि मङ, 14वें परमपावनदलाईलामा, बोद र ुङ भोसरिगद्पर खङ, लक्ष्मीनगर, दिल्ली। 2008
भोटवाणी–तिब्बत से सम्बन्धित अध्ययन हेतुप्रका ान, अंकः 2.1–2.1, तिब्बतीग्रन्थ एवंअभिलेख पुस्तकालय, धर्म ाालाए हिमाचलप्रदे ा। 2014–15
The 33rd Kalachakra 2014 Leh, Ladakh J&K, India 3-14 July 2014 (organized by LBA, LGA &Kongpo People and Jonang Sect)
My Land and My People, H.H the 14th Dalai Lama, Srishti Publishers & Distributors, New Delhi. 2013